Orissa TODAY
For e paper : www.orissatodaynews. in email:orissa.today1@gmail.com, orissatoday08@rediffmail.com, orissatoday.business@gmail.com
THE PEOPLE'S VOICE
• Vol - 20 • Issue-311 • Bhubaneswar • 21 June 2024 •Friday • Rs.2.00 • Pages -8 RNI NO - ODIENG/2005/16409

# Central University of Odisha to host 75th Amrit Mahotsav Session of Hindi Sahitya Sammelan

Koraput, (TNB): The 75th (Amrit Mahotsav) Convention of the Hindi Sahitya Sammelan, Prayag, will take place on June 23, 24, and 25, 2024, at the serene campus of Central University of Odisha, Koraput. This three-day event is jointly organized by the Hindi Sahitya Sammelan, Prayag, and the Central University of Odisha, Koraput. It will feature eminent litterateurs, educationists, and Hindi-Sevi representatives from across the country. The Sammelan will be inaugurated on Sunday, June 23, at 5:00 p.m. The event's Chief Guest will be Prof. R.S. Sarraju, former Pro-Vice Chancellor of the Central University of Hyderabad. The Chairman will be Prof. Sunil Baburao Kulkarni, Director of the Central Institute of Hindi, Agra, and the Inaugural Speaker will be Prof. Chakradhar Tripathi, Vice Chancellor of the Central University of Odisha. On Monday, June 24, at 10:30 a.m., the session will be chaired by Dr. Ajay Patnaik, former Head of the Hindi Department at Ravenshaw College, Cuttack. At 3:30 p.m., Prof. S.M. Iqbal, former Head of the Hindi Department at Andhra Pradesh University, Visakhapatnam, will preside. On June 25 at 10:30

a.m., Prof. Bharat Kumar Panda, Head of the Department of Education at the Central University of Odisha, will lead the session.

An open session and felicitation ceremony will be held on June 25 at 3:30 p.m., chaired by Prof. N. Nagaraju, Vice-Chancellor of Gangadhar Meher University, Sambalpur. During this event, the 'Sahitya Vachaspati' degree and 'Sammelan Samman' awards will be presented for outstanding contributions to the national language Hindi. The Hindi Sahitya Sammelan, Prayagraj, established in 1910 to combat linguistic subjugation, has a storied history as a carrier of India's cultural heritage. The first session was held in Kashi in October 1910 under the auspices of the Nagari Pracharini Sabha, Kashi, presided over by Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya. Mahatma Gandhi presided over the annual sessions in 1918 and 1935, while the first President of India, Dr. Rajendra Prasad, presided in 1936. Bharat Ratna Rajarshi Purushottamdas Tandon took the chair in 1923, and many other eminent litterateurs have led the conventions. The President of the Sahitya Sammelan Prayag, Shri Kuntak Mishra, key officials, the entire university family, and Hindi lovers of Odisha are eagerly anticipating this prestigious event.

ସକାଳ
THE SAKALA
Jeypore - 21 Jun 2024 - Page 7

# ୨୩ରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ

କୋରାପୁଟ,୨୦।୬(ସମିସ):

ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପରିସରରେ ଆସନ୍ତା ୨୩ରୁ ୨୫ ତାରିଖ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରୟାଗ ସ୍ଥିତ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ଅଧିବେଶନ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଏହି ତିନିଦିନିଆ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଆୟୋଜନ କରାଯିବ ବୋଲି ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ତରଫରୁ ଏକ ପ୍ରେସ୍ ବିଜ୍ଞପ୍ତି ମାଧ୍ୟମରେ ଜଣାଇ ଦିଆଯାଇଛି। ଏଥିରେ ଦେଶର ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଏବଂ ହିନ୍ଦୀ ସେବାରେ ନିୟୋଜିତ ଥିବା ପ୍ରତିନିଧିମାନେ ଯୋଗଦେବେ ବୋଲି ଜଣାପଡ଼ିଛି। ଆସନ୍ତା ୨୩ ତାରିଖ ଅପରାହ୍ନ ୫ଟାରେ ଏହି ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦଘାଟନ ହେବ। କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଭାବେ ହାଇଦରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋ-କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍ ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଯୋଗଦେବେ। ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ଓ ଉଦଘାଟନୀ ବକ୍ତା ଭାବେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ଯୋଗଦେବାର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଥିବା ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ତରଫରୁ କୁହାଯାଇଛି। ଏହାବ୍ୟତୀତ ଅନ୍ୟ ଦୁଇଦିନମାନଙ୍କରେ ରାଜ୍ୟ ତଥା ଦେଶର ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗର ପ୍ରଫେସରମାନେ ଯୋଗଦେବାର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ରହିଥିବାବେଳେ ଆସନ୍ତା ୨୫ ତାରିଖ ଅପରାହ୍ନ ସାଢ଼େ ୩ଟାରେ ଏକ ଖୋଲା ଅଧିବେଶନ ଓ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ସମାରୋହ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ। ଏହି ଅବସରରେ ଜାତୀୟ ଭାଷା ହିନ୍ଦୀରେ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନ ଓ ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯିବ ବୋଲି ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପକ୍ଷରୁ କୁହାଯାଇଛି।

୧୦୪ ବର୍ଷର ପ୍ରକାଶନ
ଦୈନିକ ସଂସ୍କରଣ : ଆର୍.ଏନ୍.ଆଇ ନଂ. ୪୦୦୫/୫୭
ପି.ଆର୍. ନଂ. ସିକେ(ସି)/୧୭/୨୦୨୪-୨୦୨୬
104 YEARS OF PUBLICATION
Daily Edition: R.N.I. No. 4005/57
P.R. No. CK(C)/17/2024-2026

- କୋରାପୁଟ, ଶୁକ୍ରବାର ୨୧ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪
- Koraput, Friday 21 June 2024
- ଆଜି ମିଥୁନ ୭ ଦିନ, ୧୪୩୧ ସାଲ
- ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ୩୧ ଦିନ, ୧୯୪୬ ଶକାବ୍ଦ, ଶୁକ୍ଳପକ୍ଷ ଚତୁର୍ଦଶୀ
- ଭାଗ- ୯୫ ସଂଖ୍ୟା- ୧୬୯
- www.thesamaja.com
www.samajaepaper.com
www.samajalive.in

ଟ ୭.୦୦ (୧୬ ପୃଷ୍ଠା)

ସମାଜ
The Samaja
ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା-ଉତ୍କଳମଣି ଗୋପବନ୍ଧୁଦାସ୍
PRINTED AT CUTTACK, SAMBALPUR, BALESWAR, JEYPORE

# କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ହେବ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ

ସୁନାବେଡ଼ା, ୨୦।୬(ନିପ୍ର): ସୁନାବେଡ଼ା ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପରିସରରେ ଆସନ୍ତା ୨୩, ୨୪ ଓ ୨୫ ତାରିଖରେ ପ୍ରୟାଗସ୍ଥିତ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ଅଧିବେଶନ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଏହି ତିନି ଦିନିଆ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଆୟୋଜନ କରାଯାଉଛି। ଏଥିରେ ଦେଶର ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷାବିତ ଏବଂ ହିନ୍ଦୀ ସେବାରେ ନିୟୋଜିତ ଥିବା ପ୍ରତିନିଧିମାନେ ଯୋଗଦେବେ। ୨୩ ତାରିଖ ରବିବାର ଏହି ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ ହେବ। କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ମୁଖ୍ୟଅତିଥି ଭାବେ ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍.ଏସ୍.ସରରାଜୁ ଯୋଗଦେବେ। ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ଓ ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ବକ୍ତା ଭାବେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ଯୋଗଦେବେ। ୨୪ ତାରିଖ ସୋମବାର ପୂର୍ବାହ୍ନ ସାଢ଼େ ୧୦ଟାରେ କଟକ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗର ପୂର୍ବତନ ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଅଜୟ ପଟ୍ଟନାୟକଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ ଅଧିବେଶନ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ। ଅପରାହ୍ନରେ ବିଶାଖାପାଟଣାସ୍ଥିତ ଆନ୍ଧ୍ରପ୍ରଦେଶ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗର ପୂର୍ବତନ ମୁଖ୍ୟ ପ୍ରଫେସର ଏସ୍.ଏମ୍‌ଇ.କବାଲ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା କରିବେ। ଜୁନ୍ ୨୫ ତାରିଖ ପୂର୍ବାହ୍ନରେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ ମୁଖ୍ୟ ପ୍ରଫେସର ଭରତ କୁମାର ପଣ୍ଡା ଅଧିବେଶନର ନେତୃତ୍ୱ ନେବେ। ସମ୍ବଲପୁର ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଏନ୍. ନାଗାରାଜୁଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ ଆସନ୍ତା ୨୫ ତାରିଖରେ ଏକ ଖୋଲା ଅଧିବେଶନ ଓ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ସମାରୋହ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ। ଏହି ଅବସରରେ ଜାତୀୟ ଭାଷା ହିନ୍ଦୀରେ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ 'ସାହିତ୍ୟବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନ' ଓ 'ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ' ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯିବ।

सन्मार्ग, भुवनेश्वर, शुक्रवार, 21 जून, 2024

ओडिशा

# ओडिशा केंद्रीय विवि में होगा हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन

## हिंदी साहित्य सम्मेलन के 75वें अधिवेशन में जुटेंगे देशभर के हिंदी सेवी

**कोरापुट, ( संवाद सूत्र ) :** हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का 75वां (अमृत महोत्सव) अधिवेशन आगामी 23, 24 एवं 25 जून को ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के परिसर में संपन्न होगा। संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न अंचलों से प्रतिष्ठत साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं हिंदी-सेवी प्रतिनिधि भाग लेंगे। कार्यक्रम का उद्घाटन 23 जून की शाम 5 बजे होगा। उद्घाटन कार्यक्रम में हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. आर.एस. सर्राजु मुख्य अतिथि होंगे। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुलकर्णी कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे वहीं ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी

स्वागताध्यक्ष की भूमिका निभाएंगे। वहीं 24 जून को पूर्वाह्न 10:30 बजे साहित्य परिषद का सभापतित्व रेवेंशा कॉलेज कटक के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अजय पटनायक करेंगे। अपराह्न 3:30 बजे राष्ट्रभाषा परिषद का सभापतित्व आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय विशाखापट्टनम के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. एस.एम. इकबाल करेंगे, जबकि 25 जून को पूर्वाह्न 10:30 बजे समाजशास्त्र परिषद का सभापतित्व ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. भरत कुमार पंडा करेंगे। 25 जून को अपराह्न 3:30 बजे से खुला अधिवेशन एवं सम्मान समारोह का आयोजन होगा। गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, संबलपुर के कुलपति प्रो. एन. नागाराजू इसकी अध्यक्षता करेंगे। इस अधिवेशन में राष्ट्रभाषा हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि अलंकरण और 'सम्मेलन सम्मान' भी प्रदान किया जाएगा।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Odisha Patrika - 21 Jun 2024 - 21bsrp1
epaper.navabharat.news

# ओडिशा केंद्रीय विवि में हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन 23 से

## तीन दिनों तक देशभर के लब्धप्रतिष्ठत साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं हिंदी-सेवी प्रतिनिधि करेंगे मंथन

**नवभारत रिपोर्टर। कोरापुट।**

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का 75वां (अमृत महोत्सव) अधिवेशन आगामी 23, 24 एवं 25 जून 2024 को ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के प्रांगण में आयोजित होगा। संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में देश के विभिन्न अंचलों से लब्धप्रतिष्ठत साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं हिंदी-सेवी प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। रविवार 23 जून को शाम 5 बजे इस कार्यक्रम का उद्घाटन होगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो आरएस सरार्जु, पूर्व प्रति कुलपति, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, सभापति प्रो सुनील बाबूराव कुलकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं स्वागताध्यक्ष प्रो चक्रधर त्रिपाठी, कुलपति, ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय होंगे। 24 जून सोमवार को पूर्वाह्न 10:30 बजे साहित्य परिषद का सभापतित्व डॉ अजय पटनायक, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, रावेंशा कॉलेज, कटक, अपराह्न 3:30 बजे राष्ट्रभाषा परिषद का सभापतित्व प्रो एसएम इकबाल, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, आंध्रप्रदेश विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम और 25 जून को पूर्वाह्न 10:30 बजे समाजशास्त्र परिषद का सभापतित्व प्रो भरत कुमार पंडा, विभागाध्यक्ष, शिक्षा-विभाग, ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय करेंगे। 25 जून को पूर्वाह्न 3:30 बजे से खुला अधिवेशन एवं सम्मान समारोह का आयोजन होगा। प्रो एन नागाराजु, कुलपति, गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, संबलपुर इसकी अध्यक्षता करेंगे। इस अधिवेशन में राष्ट्रभाषा हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए ह्यसाहित्य वाचस्पतिह्ण उपाधि अलंकरण और ह्यसम्मेलन सम्मानह्ण भी प्रदान किया जाएगा। गौरतलब है कि भारत की सांस्कृतिक विरासत के संवाहक के तौर पर प्रयागराज स्थित हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की गौरवशाली परम्परा रही है।

### संस्थान की स्थापना सन 1910 में

इस संस्थान की स्थापना सन 1910 में भाषायी दासता से मुक्ति दिलाने हेतु हुई थी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने स्थापना-काल से ही अधिवेशनों की परम्परा का सूत्रपात किया है। सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के तत्त्वावधान में अक्टूबर 1910 में काशी में ही सम्पन्न हुआ, जिसका सभापतित्व महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय ने किया। पुनः उन्होंने सन 1919 में सम्मेलन का सभापतित्व किया। महात्मा गांधी ने सन 1918 और सन 1935 में सम्मेलन के वार्षकि अधिवेशन का सभापति पद स्वीकार किया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने सन 1936 में, भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने 1923 में सम्मेलन का सभापतित्व किया। देश के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों ने भी उक्त अधिवेशनों की अध्यक्षता की है। साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रधानमंत्री श्री कुंतक मिश्र एवं प्रमुख अधिकारी गण तथा संपूर्ण विश्वविद्यालय परिवार और ओडिशा के हिंदी प्रेमी इस कार्यक्रम के प्रति विशेष उत्साहित हैं।

Orissa TODAY

For e paper : www.orissatodaynews. in email:orissa.today1@gmail.com, orissatoday08@rediffmail.com, orissatoday.business@gmail.com

THE PEOPLE'S VOICE

• Vol - 20 • Issue-315 • Bhubaneswar • 25 June 2024 •Tuesday • Rs.2.00 • Pages -8 RNI NO - ODIENG/2005/16409

*Inauguration of the 75th Amrit Mahotsav Convention of the Hindi Sahitya Sammelan at Central University of Odisha, Koraput*

# Vice Chancellor Calls for Global Connection Through Hindi

Koraput, (TNB): The 75th Amrit Mahotsav Convention of the Hindi Sahitya Sammelan, jointly organized by the Hindi Sahitya Sammelan and the Central University of Odisha, Koraput, was formally inaugurated on 23 June 2024 at the main campus of the Central University of Odisha, Koraput. The event commenced with traditional ceremonies and welcomed Hindi enthusiasts from across India. The inauguration began with the lighting of the ceremonial lamp, followed by a welcome address from Prof. Chakradhar Tripathi, Hon'ble Vice-Chancellor of the Central University of Odisha, Koraput. Prof. Tripathi emphasized that Hindi is more than just a language; it is a complete culture. He stressed the need to connect the world through Hindi, highlighting its role as a symbol of India's inclusive culture capable of spreading Indian heritage globally. He expressed his deep affection for Hindi and his vision for its future, underscoring the importance of the mystics who have shaped the language. He also highlighted the support from the government for the Hindi literacy campaign in Odisha. Prime Minister of the Hindi Sahitya Sammelan, Shri Kuntak Mishra, expressed pride in hosting the convention at the university campus. He noted that Hindi literature is now being written in Odia as well, demonstrating the potential for greater linguistic unity. Shri Mishra called for recognizing the historical significance of the Sahitya Sammelan and maintaining the cultural unity of India through Hindi. Prof. R.S. Sarraju, former Pro-Vice Chancellor of the Central University of Hyderabad, served as the Chief Guest for the inaugural session. He emphasized the need to

connect South India and other parts of the country through Hindi, noting the portrayal of middle-class consciousness by Hindi writers. He called for the technological enrichment of Hindi, linking its practice to cultural perfection.

Dr. Sunil Baburao Kulkarni, Director of the Central Institute of Hindi, Agra, highlighted the global stature, importance, and respect of Hindi today. He stressed the need to preserve and document the endangered dialects and languages of Hindi. Dr. Kulkarni was awarded the title 'Sahitya Vachaspati' by the Hindi Sahitya Sammelan, and he emphasized the importance of continuing the tradition of Hindi service, announcing the translation of the Hindi Certificate Course textbook into Odia language. The conference was conducted by Shesh Mani Pandey, former office superintendent of Hindi Sahitya Sammelan, and the vote of thanks extended by Prof. Ramkishore Sharma, Literature Minister. The three-day national convention will run from June 23 to 25. The event saw the presence of distinguished guests, including Registrar Dr. Narsingh Charan Panda; Head of Department, Hindi, Dr. Chakradhar Pradhan, Assistant Professor Dr. Manoj Kumar Singh, Dr. Shrikant Arle, Prof. Hemraj Meena, Dr. Dr. Nirjharini Tripathi, Dr. Padmacharan Mishra, Dr. Prasenjit Sinha, Dr. Kakoli Banerjee, Dr. Naveen Pradhan, Dr. Gurjit Walia, Prof. Bharat Panda, Dr. Nikhil Gowda, Dr. Kapil Khemendu, Dr. Sarveshwar Barik, Dr. Phagunath Bhoi, Kumar Gaurav, Asim Tikri, and over 300 scholars, litterateurs, teachers, and Hindi service enthusiasts from different states. This event marks a significant milestone in promoting and preserving Hindi literature, reflecting a collective effort to uphold the cultural unity of India through its rich linguistic heritage.

Orissa TODAY THE PEOPLE'S VOICE

THE KALINGA CHRONICLE
12th ANNIVERSARY
FIND US ON facebook.com/thekalingachronicle
FOLLOW US ON TWITTER twitter.com/thekalingachronicle
Daily Edition: R.N.I. No: ODIENG/2013/52530
Popular People's Daily of Odisha
VOL-12 ISSUE NO-213 BHUBANESWAR TUESDAY, 25 JUNE, 2024 ₹ 2.50

# Inauguration of the 75th Amrit Mahotsav Convention of the Hindi Sahitya Sammelan at Central University of Odisha, Koraput

**Koraput,(KCN):** The 75th Amrit Mahotsav Convention of the Hindi Sahitya Sammelan, jointly organized by the Hindi Sahitya Sammelan and the Central University of Odisha, Koraput, was formally inaugurated on 23 June 2024 at the main campus of the Central University of Odisha, Koraput. The event commenced with traditional ceremonies and welcomed Hindi enthusiasts from across India.

The inauguration began with the lighting of the ceremonial lamp, followed by a welcome address from Prof. Chakradhar Tripathi, Hon'ble Vice-Chancellor of the Central University of Odisha, Koraput. Prof. Tripathi emphasized that Hindi is more than just a language; it is a complete culture. He stressed the need to connect the world through Hindi, highlighting its role as a symbol of India's inclusive culture capable of spreading Indian heritage globally. He expressed his deep affection for Hindi and his vision for its future, underscoring the importance of the mystics who have shaped the language. He also highlighted the support from the government for the Hindi literacy campaign in Odisha.

Prime Minister of the Hindi Sahitya Sammelan, Shri Kuntak Mishra, expressed pride in hosting the convention at the university campus. He noted that Hindi literature is now being written in Odia as well, demonstrating the potential for greater linguistic unity. Shri Mishra called for recognizing the historical significance of the Sahitya Sammelan and maintaining the cultural unity of India through Hindi.

Prof. R.S. Sarraju, former Pro-Vice Chancellor of the Central University of Hyderabad, served as the Chief Guest for the inaugural session. He emphasized the need to connect South India and other parts of the country through Hindi, noting the portrayal of middle-class consciousness by Hindi writers. He called for the technological enrichment of Hindi, linking its practice to cultural perfection.

Dr. Sunil Baburao Kulkarni, Director of the Central Institute of Hindi, Agra, highlighted the global stature, importance, and respect of Hindi today. He stressed the need to preserve and document the endangered dialects and languages of Hindi. Dr. Kulkarni was awarded the title 'Sahitya Vachaspati' by the Hindi Sahitya Sammelan, and he emphasized the importance of continuing the tradition of Hindi service, announcing the translation of the Hindi Certificate Course textbook into Odia language.

The conference was conducted by Shesh Mani Pandey, former office superintendent of Hindi Sahitya Sammelan, and the vote of thanks extended by Prof. Ramkishore Sharma, Literature Minister. The three-day national convention will run from June 23 to 25. The event saw the presence of distinguished guests, including Registrar Dr. Narsingh Charan Panda; Head of Department, Hindi, Dr. Chakradhar Pradhan, Assistant Professor Dr. Manoj Kumar Singh, Dr. Shrikant Arle, Prof. Hemraj Meena, Dr. Dr. Nirjharini Tripathi, Dr. Padmacharan Mishra, Dr. Prasenjit Sinha, Dr. Kakoli Banerjee, Dr. Naveen Pradhan, Dr. Gurjit Walia, Prof. Bharat Panda, Dr. Nikhil Gowda, Dr. Kapil Khemendu, Dr. Sarveshwar Barik, Dr. Phagunath Bhoi, Kumar Gaurav, Asim Tikri, and over 300 scholars, litterateurs, teachers, and Hindi service enthusiasts from different states.

This event marks a significant milestone in promoting and preserving Hindi literature, reflecting a collective effort to uphold the cultural unity of India through its rich linguistic heritage.

## RED (ER-I and ER-II),NTPC highlights Inclusive Development and

सन्मार्ग
खबरें अनेक सच्चाई एक
sanmarg.in

# हिंदी एक भाषा नहीं संपूर्ण संस्कृति है : प्रो. चक्रधर

**कोरापुट, (संवाद सूत्र) :** हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी साहित्य सम्मेलन का 75वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं परिसंवाद का रविवार को यहां केंद्रीय विश्वविद्यालय के परिसर में शुभारंभ हुआ। इसका उद्घाटन हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. आर.एस. सर्राजु ने बतौर मुख्य अतिथि किया। इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण में ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय कोरापुट के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी एक भाषा नहीं बल्कि एक संपूर्ण संस्कृति है। यह भारत की समावेशी संस्कृति का प्रतीक है जो भारत के जन-जन को जोड़कर भारतीय संस्कृति के वैश्विक पटल पर प्रचार-प्रसार करने की क्षमता रखती है। भाषा के माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बरकरार रखने की आवश्यकता है और इसमें हिंदी समर्थ है। उन्होंने कहा कि ओड़िशा में हिंदी साक्षरता अभियान में सरकार से भी सहायता मिल रही है। वहीं हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रमुख कुंतक मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में अधिवेशन होने से सम्मेलन खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। आज ओड़िया में भी हिंदी साहित्य लिखा जा रहा है। अगर लिपि में भिन्नता न हो तो हिंदी बहुत आगे बढ़ सकती है। हिंदी साहित्य सम्मेलन के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करते हुए इसकी महत्ता को पहचानने की आवश्यकता है। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि

हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. आर.एस. सर्राजु ने हिंदी से जुड़ने तथा हिंदी के माध्यम से दक्षिण भारत सहित देश के अन्य भागों को जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी को तकनीकी रूप से समृद्ध करते हुए उसे आगे ले जाना है क्योंकि हिंदी की साधना संस्कृतिक पूर्णता की साधना है। ऐसे में हिंदी साहित्य सम्मेलन अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। प्रो. सर्राजु ने कहा कि अब हिंदी भाषा भारत ही नहीं, बल्कि कई देशों में बोली जाती है। हिंदी हमारी अपनी भाषा है जबकि अंग्रेजी अपनाई गई भाषा है। हिंदी, अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर विकसित हो रही है। शब्दों के माध्यम से ही हम दुनिया को आत्मसात कर रहे हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने सभापतित्व संबोधन में कहा कि आज वैश्विक स्तर पर हिंदी का कद, महत्व व सम्मान बढ़ा है। आज हिंदी की विलुप्त होती बोलियों तथा भाषाओं के संरक्षण तथा प्रलेखन की आवश्यकता है। इस दिशा में मिलकर कार्य करना होगा। इस मौके पर हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा डॉ कुलकर्णी को 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रो. कुलकर्णी ने कहा कि हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में सम्मिलित होना सौभाग्य की बात है। उन्होंने हिंदी सेवा को राष्ट्र सेवा से जोड़कर इसकी आवश्यकता पर अधिक बल दिया। केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं से अवगत करते हुए उन्होंने हिंदी सर्टिफिकेट कोर्स के पाठ्यपुस्तक को ओड़िया भाषा में अनुवाद करवाने की घोषणा की। अधिवेशन परिसंवाद का संचालन हिंदी साहित्य सम्मेलन के पूर्व कार्यालय अधीक्षक शेषमणि पांडेय एवं धन्यवाद ज्ञापन सम्मेलन के साहित्यमंत्री प्रो. रामकिशोर शर्मा ने किया। इस त्रिदिवसीय अधिवेशन का 25 जून को समापन होगा। समारोह में कुलसचिव डॉ. नरसिंह चरण पंडा, विभागाध्यक्ष डॉ. चक्रधर प्रधान, सहायक प्राध्यापक डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ श्रीकांत आर्ले, प्रोफेसर हेमराज मीणा, डॉ. निर्झरिणी त्रिपाठी आदि उपस्थित थे।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Odisha Patrika - 25 Jun 2024 - 25bsrp4
epaper.navabharat.news

# हिंदी के माध्यम से ब्रह्मांड को जोड़ने की आवश्यकता : प्रो. त्रिपाठी

**75वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं परिसंवाद का भव्य उद्घाटन**
**देशभर के 300 से अधिक विद्वानों का जमावड़ा**

नवभारत रिपोर्टर । कोरापुट।

हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के संयुक्त तत्वावधान में 75वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं परिसंवाद का उद्घाटन मुख्य अतिथि हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. आर एस सर्राजु ने किया। सर्वप्रथम दीप प्रज्ज्वलन के बाद ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि हिंदी एक भाषा नहीं, बल्कि एक संपूर्ण संस्कृति है। हिंदी के माध्यम से ब्रह्मांड को जोड़ने की आवश्यकता है। हिंदी केवल भाषा ही नहीं, भारत की समावेशी संस्कृति का प्रतीक है, जो भारत के जन-जन को जोड़कर भारतीय संस्कृति को वैश्विक पटल पर प्रचार-प्रसार करने की क्षमता रखती है। उन्होंने अपना हिंदी प्रेम तथा हिंदी को लेकर बड़े सपने देखने की ओर संकेत किया। जिन मनीषियों ने इसे संवारा है उन्हें हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। भाषा के माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बरकरार रखने की आवश्यकता है और इस सांस्कृतिक एकता को बरकरार रखने में हिंदी समर्थ है। ओडिशा में हिंदी साक्षरता अभियान में सरकार से भी सहायता मिल रही है।

**हिंदी की साधना सांस्कृतिक पूर्णता की साधना-** उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. आरएस सर्राजु ने हिंदी से जुड़ने तथा हिंदी के माध्यम से दक्षिण भारत सहित देश के अन्य भागों को सम्मिलित होने की आवश्यकता की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि भारत की मध्यवर्गीय चेतना को हिंदी साहित्य के लेखकों ने विशेष रूप से चित्रित किया है। हिंदी को तकनीकी रूप से समृद्ध करते हुए उसे आगे ले जाना है, क्योंकि हिंदी की साधना सांस्कृतिक पूर्णता की साधना है। ऐसे में संस्था अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ऐसी संस्था है, जिसका ऐतिहासिक महत्व है। प्रो. सर्राजु ने कहा कि अब हिंदी भाषा भारत ही नहीं; बल्कि कई देशों में बोली जाती है। हिंदी हमारी अपनी भाषा है जबकि अंग्रेजी अपनाई गई भाषा है। हिंदी, अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर विकसित हो रही है। शब्दों के माध्यम से ही हम दुनिया को आत्मसात कर रहे हैं।

**वैश्विक स्तर पर हिंदी का कद, महत्व व सम्मान बढ़ा-** केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने सभापतित्व संबोधन में कहा कि आज वैश्विक स्तर पर हिंदी का कद, महत्व व सम्मान बढ़ा है। आज हिंदी की विलुप्त होती बोलियों तथा भाषाओं के संरक्षण तथा प्रलेखन की आवश्यकता है। हमें इस दिशा में मिलकर कार्य करना होगा। सम्मेलन की असाधारण भूमिका के कारण ही हिंदी देश के संविधान व प्रशासनिक व्यवस्था में अपना विशिष्ट स्थान बना पाई है।

**हिंदी सर्टिफिकेट कोर्स के पाठ्यपुस्तक को ओड़िया में होगा अनुवाद-** केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं से अवगत करते हुए उन्होंने हिंदी सर्टिफिकेट कोर्स के पाठ्यपुस्तक को ओड़िया भाषा में अनुवाद करवाने की घोषणा की। हिंदी के द्वारा सारे विश्व को ढंकना है, हिंदी ने इस कार्य को अपने कंधे पर ले लिया है, इसलिए हमें अपने हौसले बुलंद रखने होंगे। अधिवेशन परिसंवाद का संचालन हिंदी साहित्य सम्मेलन के पूर्व कार्यालय अधीक्षक शेषमणि पांडेय एवं धन्यवाद ज्ञापन सम्मेलन के साहित्यमंत्री प्रो. रामकिशोर शर्मा ने किया। ज्ञातव्य हो कि यह त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन 23, 24 और 25 जून तक मनाया जाएगा। इस अधविशन समारोह में कुलसचिव डॉ. नरसिंह चरण पंडा, विभागाध्यक्ष डॉ. चक्रधर प्रधान, सहायक प्राध्यापक डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ. श्रीकांत आर्ले, प्रोफेसर हेमराज मीणा, डॉ. निर्झरिणी त्रिपाठी, डॉ. पद्माचरण मिश्रा, डॉ. प्रसेनजीत सिन्हा, डॉ. काकोली बैनर्जी, डॉ. नवीन प्रधान, डॉ. गुरजीत वालिया, प्रो. भरत पंडा, डॉ. निखिल गौड़ा, डॉ. कपिल खेमेंदु, डॉ. सर्वेश्वर बारिक, डॉ. फगुनाथ भोई, कुमार गौरव, असीम टिकरी के साथ-साथ देशभर के अलग-अलग राज्यों से लगभग 300 से अधिक विद्वान साहित्यकार, शिक्षक व हिंदीसेवी प्रेमी उपस्थित थे।

## डॉ. कुलकर्णी को साहित्य वाचस्पति उपाधि

इस दौरान हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा डॉ. कुलकर्णी को साहित्य वाचस्पति उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर कुलकर्णी ने फिर से कहा कि हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में सम्मिलित होना सौभाग्य की बात है। इसकी परंपरा को निरंतरता के पथ पर ले जाना बहुत जरूरी है। उन्होंने अपने वक्तव्य में हिंदी सेवा को राष्ट्र सेवा से जोड़कर इसकी आवश्यकता पर अधिक बल दिया। हिंदी के सभी संस्थाओं के अनुदान मिलते रहे उसकी निरंतरता बरकरार रहे एवं लोग हिंदी सेवा को व्रत के रूप में ग्रहण करें।

## हिन्दी की महत्ता को पहचानने की आवश्यकता

हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री कुन्तक मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में अधिवेशन होने से सम्मेलन खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। आज ओड़िया में भी हिंदी साहित्य लिखा जा रहा है, अगर लिपि में भिन्नता ना हो तो हिंदी बहुत आगे बढ़ सकती है। हिंदी साहित्य सम्मेलन के गौरवशाली इतिहास को स्मरण करते हुए इसकी महत्ता को पहचानने की आवश्यकता है। जिन मनीषियों ने इसे संवारा है उन्हें हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। भाषा के माध्यम से देश की एकता को बरकरार रखने की आवश्यकता है और इसमें हिंदी समर्थ है।

ଭିତରେ...
- ଦରଦାମ ବୃଦ୍ଧି ନେଇ ଖାଦ୍ୟ ଯୋଗାଣ ମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଚେତାବନୀ: ବେଆଇନ ଗଚ୍ଛିତ କଲେ ଦୃଢ଼ କାର୍ଯ୍ୟାନୁଷ୍ଠାନ
- ରଥଯାତ୍ରାରେ ସବୁ ବ୍ଲକରୁ ବସ୍ ଗଡ଼ିବ
- ରତ୍ନଭଣ୍ଡାର ନିଶ୍ଚୟ ଖୋଲାଯିବ: ଆଇନମନ୍ତ୍ରୀ
- ନଡ୍ଡା ରାଜ୍ୟସଭା ନେତା

ପ୍ରମେୟ
THE PRAMEYA
PRINTED AT BHUBANESWAR SAMBALPUR PANIKOILI JEYPORE
RNI REGD NO: ODIODI/2011/37619 - POSTAL REGD NO: BN/208/23-25
ବର୍ଷ ୧୪ | ସଂଖ୍ୟା ୫୫ | ଜୟପୁର
୨୫ ଜୁନ ୨୦୨୪ | ମଙ୍ଗଳବାର
16 PAGES | ₹7.00
VOLUME 14 | ISSUE 55 | JEYPORE
25 JUNE 2024 | TUESDAY

ସୁପର-୮
ICC MEN'S T20 WORLD CUP WEST INDIES & USA 2024
ଆଫଗାନିସ୍ତାନ
ବନାମ
ବାଂଲାଦେଶ
ସକାଳ: ୬.୦୦ ସ୍ଥାନ: କିଙ୍ଗସଟାଉନ

www.prameya.com | prameyaodia | prameyaodia

# ସିୟୁରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ

ସେମିଳିଗୁଡ଼ା,୨୪ା୬(ଆପ୍ର): ସ୍ଥାନୀୟ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ(ସିୟୁ) ପରିସରରେ ତିନିଦିନିଆ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ ହୋଇଛି। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ସିୟୁର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଏହାର ଆୟୋଜନ କରାଯାଇଛି। ଏହି ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଆସନ୍ତା ୨୫ ତାରଖ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚାଲିବ ବୋଲି ଜଣାଯାଇଛି।

ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ଉତ୍ସବରେ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବା ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଭାବେ ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋ-କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍.ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ। ଦକ୍ଷିଣଭାରତ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଆଗ୍ରା ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ୍ ଇନ୍‌ଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା କରିଥିଲେ।

ଏହି ଅବସରରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ପକ୍ଷରୁ ତାଙ୍କୁ 'ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି' ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। ଶେଷମଣି ପାଣ୍ଡେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପରିଚାଳନା, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ଅତିଥି ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ ଏବଂ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ। ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ.ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ଡ.ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ.ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ.ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ.ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ.ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ.କାକାଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ.ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ.ଗୁରଜିତ୍ ଓ୍ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ.ନିଖିଳ ଗୌଡ଼ା, ଡ.କପିଳ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ.ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ.ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩ଶହରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ।

ସମ୍ବାଦ

# ସିୟୁରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ

କୋରାପୁଟ,୨୪/୬(ଇମିସ): ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଓ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ସମ୍ମିଳନୀ କୋରାପୁଟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ ହୋଇଛି। ସମଗ୍ର ଭାରତରୁ ଆସିଥିବା ହିନ୍ଦୀପ୍ରେମୀଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବା ସହ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପାରମ୍ପରିକ ସମାରୋହ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା। କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଏଥିସହ ହିନ୍ଦୀକୁ ଭାରତର ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରିରଖିବାର କ୍ଷମତା ଥିବା, ବିଶ୍ୱ ମଞ୍ଚରେ ଭାଷାର ଭବିଷ୍ୟତ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଥିବା କହିଥିଲେ। କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ମୁଖ୍ୟଅତିଥି ଭାବେ ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍.ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣଭାରତ ସମେତ ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲର୍କର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ସୌଭାଗ୍ୟ ବୋଲି କହିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡ. କୁଲର୍କର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ 'ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି' ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶେଷମଣି ପାଣ୍ଡେ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ହମେରାଜ ମୀନା ଅତିଥି ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଫସେର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀରେ ରଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗରର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡ. ମନୋଜ ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ଗୁରଜିତ୍ ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଲ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଲ ଖମେନେ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ।

୧୦୪ ବର୍ଷର ପ୍ରକାଶନ
ଦୈନିକ ସଂସ୍କରଣ : ଆର୍.ଏନ୍.ଆଇ ନଂ. ୪୦୦୫/୫୭
ପି.ଆର୍. ନଂ. ସିକେ(ସି)/୧୭/୨୦୨୪-୨୦୨୬
104 YEARS OF PUBLICATION
Daily Edition: R.N.I. No. 4005/57
P.R. No. CK(C)/17/2024-2026
କୋରାପୁଟ, ମଙ୍ଗଳବାର ୨୫ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪
Koraput, Tuesday 25 June 2024
ଆଜି ମିଥୁନ ୧୧ ଦିନ, ୧୪୩୧ ସାଲ
ଆଷାଢ଼ ୪ ଦିନ, ୧୯୪୬ ଶକାବ୍ଦ, କୃଷ୍ଣପକ୍ଷ ଚତୁର୍ଥୀ
ଭାଗ- ୯୫ ସଂଖ୍ୟା- ୧୭୩
www.thesamaja.com
www.samajaepaper.com
www.samajalive.in
ଟ ୭.୦୦ (୧୬ ପୃଷ୍ଠା)

ସମାଜ
The Samaja
ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା-ଉତ୍କଳମଣି ଗୋପବନ୍ଧୁ ଦାସ
PRINTED AT CUTTACK, SAMBALPUR, BALESWAR, JEYPORE

# କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଜାତୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ

ସୁନାବେଡ଼ା, ୨୪।୬(ନିପ୍ର): ପ୍ରୟାଗ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ ହୋଇଯାଇଛି । ସମଗ୍ର ଭାରତରୁ ଆସିଥିବା ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରାଯାଇ ସମାରୋହ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା । କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ

ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ । ସେ ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ ଏହା ଭାରତର ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖିଛି ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ । ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ । ମୁଖ୍ୟଅତିଥି ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋ-କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍‌ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ । ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତା ପାଇଁ ହିନ୍ଦୀକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଜରୁରୀ ଏବଂ ଏହି ପ୍ରୟାସରେ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି ବୋଲି ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି କହିଥିଲେ । ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିବା ସହ ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଜାତୀୟ ସେବା ସହିତ ଯୋଡ଼ିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ହିନ୍ଦୀ ସାର୍ଟିଫିକେଟ୍ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକକୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରିବାକୁ ଘୋଷଣା କରିବା ସହ ସମସ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସହଯୋଗ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡ.କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ ‘ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି’ ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା । ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ଉତ୍ସବକୁ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶେଷମଣି ପାଣ୍ଡେ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ଅତିଥି ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବାବେଳେ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ । ଏହି ତିନି ଦିନିଆ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଜୁନ୍ ୨୫ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚାଲିବ । ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗରର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡା. ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ.ଗୁରଜିତ୍ ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ.ନିଖିଲ ଗୌଡ଼ା, ଡ.କପିଲ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ.ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ ।

ଥାଉଁ
ଆସିଛି
ଜଡ଼ାଗୁଡା
ପୁଲିସ କ୍ୟାମ୍ପ
ପାହାଡ଼ଗୁଡ଼ିକରେ
ରହିଛି । ସେମିଲିଗୁଡ଼ା
ଦିଆଯାଉଛି ସେଥିରେ
ପକ୍ଷରୁ ରଖା ଯାଇଥାନ୍ତା
ପାଉଛି । ପୌରାଞ୍ଚଳ ମଧ୍ୟ
କରାଯିବା ପାଇଁ ପରିବେଶ
ବିଭିନ୍ନ ସାମାଜିକ ଅନୁଷ୍ଠାନ
ଆୟୋଜନ କରାଯାଇଥିଲା
କରାଯିବାକୁ ପ୍ରସ୍ତାବ ରଖା
କରିବାର ସର୍ବୋତ୍କୃଷ୍ଟ
ଗଛ ହେବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ
ପଦକ୍ଷେପ ନେବାକ
ଉତ୍ତମ ପରିବେ
ସବୁଜ ବନା

ଧରିତ୍ରୀ
DHARITRI
ଭୁବନେଶ୍ୱର, ମଙ୍ଗଳବାର, ଜୁନ୍ ୨୫ /୨୦୨୪ (୧୪ ପୃଷ୍ଠା) Bhubaneswar, Tuesday, June 25/2024 Page 14 ₹ 7.00 | RAYAGADA
୫୦ଶ ଭାଗ ୨୧୧ ସଂଖ୍ୟା www.orissakhabar.com/www.dharitri.com | Printed at Rayagada, Bhubaneswar, Sambalpur & Angul VOLUME 50 ISSUE 211 ମୂଲ୍ୟ ₹୭/-

# ହିନ୍ଦୀ ମାଧମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ନେଇ ଗୁରୁତ୍ୱ

## ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ସିୟୁଓର ଜାତୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ

କୋରାପୁଟ,୨୪।୬
(ଅମିତାଭ ବେହେରା)

ଡକ୍ଟର କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ 'ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି' ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଉଛି।

ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ସମ୍ମିଳନୀ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ(ସିୟୁଓ) କୋରାପୁଟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଛି। ସୋମବାର ଥିଲା ସମ୍ମିଳନୀର ଦ୍ୱିତୀୟ ଦିବସ। କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ସେ ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ; ଏହା ଭାରତତୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ। ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ରଖିଛି ବୋଲିପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀର ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଭୂମିକା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରି ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଏହି ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ନିରନ୍ତର ପ୍ରୟାସ ଜାରି ରଖିବାକୁ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଥିଲେ। ମୁଖ୍ୟବକ୍ତା ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍‌ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନ୍‌ଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍ ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଯୋଗ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡକ୍ଟର କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ 'ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି' ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ଗୁରଜିତ୍ ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଲ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଲ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବଙ୍କ ସହ ଅନ୍ୟମାନେ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ।

ଦୈନିକ ଆଶା
Dainik Asha, The Oldest Odiya Daily,
ORISSA RADIO HOUSE
ଓଡ଼ିଶା ରେଡ଼ିଓ ହାଉସ୍

## ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପରିସରରେ ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍ଘାଟିତ

# ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ପାଇଁ କୁଳପତିଙ୍କ ଆହ୍ୱାନ

ଜୟପୁର,୨୪।୬ (ଆଜିସ): ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ସମ୍ମିଳନୀ ୨୩ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪ରେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଭାବେ ଉଦ୍ଘାଟିତ ହୋଇଛି। ସମଗ୍ର ଭାରତରୁ ଆସିଥିବେ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବା ସହ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପାରମ୍ପରିକ ସମାରୋହ ସହିତ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା।ମାନ୍ୟବର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ସେ ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ ଏହା ଭାରତର ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖିଛି ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଭଲପାଇବା ପ୍ରକାଶ କରିବା ସହ ଅନ୍ତର୍ଜାତୀୟ ମଞ୍ଚରେ ଭାଷାର ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଭବିଷ୍ୟତର ପରିକଳ୍ପନା କରିଥିଲେ ।ସମ୍ମିଳନୀର

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ । ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଭୂମିକା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିବା ସହ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଏହି ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ନିରନ୍ତର ପ୍ରୟାସ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ ।

ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋ-କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆଁ ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ଭାରତର ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଚେତନାକୁ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଭାବରେ ଚିତ୍ରଣ କରିଛି ଏବଂ ହିନ୍ଦୀର ବୈଶ୍ୱିକ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ସରରାଜୁ କହିଥିଲେ ଯେ ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତା ପାଇଁ ହିନ୍ଦୀକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଜରୁରୀ ଏବଂ ଏହି ପ୍ରୟାସରେ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି ।ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ସୌଭାଗ୍ୟ ପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ ଏବଂ ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଜାତୀୟ ସେବା ସହିତ ଯୋଡ଼ିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ହିନ୍ଦୀ ସାର୍ଟିଫିକେଟ୍ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକକୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରିବାକୁ ଘୋଷଣା କରିବା ସହ ସମସ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସହଯୋଗ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଏକ ପ୍ରତିବଦ୍ଧତା ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ସେ ଲୋକମାନଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡକ୍ଟର କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା ।

ଉଦ୍ଘାଟନୀ ଉତ୍ସବକୁ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶ୍ରୀ ଶେଷ ମଣି ପାଣ୍ଡେ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥିପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରି ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଏହି ତିନି ଦିନିଆ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଜୁନ୍ ୨୩ରୁ ଜୁନ୍ ୨୫ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚାଲିବ। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିନ୍ଦୀବିଭାଗର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ସୁରଜିତ୍ ଡାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଳ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଲ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ।ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଚାର ଓ ସଂରକ୍ଷଣ ଦିଗରେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମାଇଲଖୁଣ୍ଟ ଥିଲା, ଯାହା ଏହାର ସମୃଦ୍ଧ ଭାଷାଗତ ଐତିହ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତାକୁ ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ଏକ ସାମୂହିକ ପ୍ରୟାସକୁ ପ୍ରତିଫଳିତ କରିଥିଲା ।

# ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ପାଇଁ କୁଳପତିଙ୍କ ଆହ୍ୱାନ

କୋରାପୁଟ,୨୪।୬(ନି ପ୍ର):ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ସମ୍ମିଳନୀ ୨୩ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪ରେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଭାବେ ଉଦ୍ଘାଟିତ ହୋଇଛି। ସମଗ୍ର ଭାରତରୁ ଆସିଥିବେ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବା ସହ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପାରମ୍ପରିକ ସମାରୋହ ସହିତ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା। କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ସେ ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ ଏହା ଭାରତର ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖିଛି ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଭଲପାଇବା ପ୍ରକାଶ କରିବା ସହ ଅନ୍ତର୍ଜାତୀୟ ମଞ୍ଚରେ ଭାଷାର ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଭବିଷ୍ୟତର ପରିକଳ୍ପନା କରିଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ । ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଭୂମିକା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିବା ସହ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଏହି ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ନିରନ୍ତର ପ୍ରୟାସ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋକୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍ ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ଭାରତର ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଚେତନାକୁ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଭାବରେ ଚିତ୍ରଣ କରିଛି ଏବଂ ହିନ୍ଦୀର ବୈଷୟିକ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ସରରାଜୁ କହିଥିଲେ ଯେ ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତା ପାଇଁ ହିନ୍ଦୀକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଜରୁରୀ ଏବଂ ଏହି ପ୍ରୟାସରେ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି । ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍‌ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ସୌଭାଗ୍ୟ ପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ ଏବଂ ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଜାତୀୟ ସେବା ସହିତ ଯୋଡ଼ିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ହିନ୍ଦୀ ସାର୍ଟିଫିକେଟ୍ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକକୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରିବାକୁ ଘୋଷଣା କରିବା ସହ ସମସ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସହଯୋଗ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଏକ ପ୍ରତିବଦ୍ଧତା ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ସେ ଲୋକମାନଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡକ୍ଟର କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା । ଉଦ୍ ଘାଟନୀ ଉତ୍ସବକୁ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶ୍ରୀ ଶେଷ ମଣି ପାଣ୍ଡେ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥିପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରି ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଏହି ତିନି ଦିନିଆ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଜୁନ୍ ୨୩ରୁ ଜୁନ୍୨୫ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚାଲିବ। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିଣ୍ଡିବିଭାଗରର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ଗୁରଜିତ୍ ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଲ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଲ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ।ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଚାର ଓ ସଂରକ୍ଷଣ ଦିଗରେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମାଇଲଖୁଣ୍ଟ ଥିଲା, ଯାହା ଏହାର ସମୃଦ୍ଧ ଭାଷାଗତ ଐତିହ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତାକୁ ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ଏକ ସାମୂହିକ ପ୍ରୟାସକୁ ପ୍ରତିଫଳିତ କରିଥିଲା।

## Vishwavani

*Date: 25.06.2024*

# ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଓ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍ଘାଟିତ

ଜୟପୁର (ବି.ପ୍ର); ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ସମ୍ମିଳନୀ ୨୩ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪ରେ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୋରାପୁଟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ଭାବେ ଉଦ୍ଘାଟିତ ହୋଇଛି। ସମଗ୍ର ଭାରତରୁ ଆସିଥିବେ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବା ସହ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପାରମ୍ପରିକ ସମାରୋହ ସହିତ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା।ମାନ୍ୟବର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ଦେଇ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ସେ ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ; ଏହା ଭାରତର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖିଛି ବୋଲି ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଭଲପାଇବା ପ୍ରକାଶ କରିବା ସହ ଅନ୍ତର୍ଜାତୀୟ ମଞ୍ଚରେ ଭାଷାର ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଭବିଷ୍ୟତର ପରିକଳ୍ପନା କରିଥିଲେ।ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ । ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଭୂମିକା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିବା ସହ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ

ଏହି ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ନିରନ୍ତର ପ୍ରୟାସ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ ।ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରୋ-କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍ ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ଭାରତର ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଚେତନାକୁ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଭାବରେ ଚିତ୍ରଣ କରିଛି ଏବଂ ହିନ୍ଦୀର ବୈଷୟିକ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର ସରରାଜୁ କହିଥିଲେ ଯେ ସାଂସ୍କୃତିକ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣତା ପାଇଁ ହିନ୍ଦୀକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଜରୁରୀ ଏବଂ ଏହି ପ୍ରୟାସରେ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି ।ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦ୍ଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ସୌଭାଗ୍ୟ ପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ ଏବଂ ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଜାତୀୟ ସେବା ସହିତ ଯୋଡ଼ିଥିଲେ । ପ୍ରଫେସର କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ହିନ୍ଦୀ ସାର୍ଟିଫିକେଟ୍ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକକୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରିବାକୁ ଘୋଷଣା କରିବା ସହ ସମସ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସହଯୋଗ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସେବାକୁ ଏକ ପ୍ରତିବଦ୍ଧତା ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ସେ ଲୋକମାନଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡକ୍ଟର କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ 'ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି' ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା । ଉଦ୍ଘାଟନୀ ଉତ୍ସବକୁ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶ୍ରୀ ଶେଷ ମଣି ପାଣ୍ଡେ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥିପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରି ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଏହି ତିନି ଦିନିଆ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଜୁନ୍ ୨୩ରୁ ଜୁନ୍ ୨୫ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚାଲିବ। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିନ୍ଦିବିଭାଗରର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ସୁରଜିତ୍ ଧ୍ୱଳିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଳ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଳ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ।ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଚାର ଓ ସଂରକ୍ଷଣ ଦିଗରେ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ମାଇଲଖୁଣ୍ଟ ଥିଲା, ଯାହା ଏହାର ସମୃଦ୍ଧ ଭାଷାଗତ ଐତିହ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତାକୁ ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ଏକ ସାମୂହିକ ପ୍ରୟାସକୁ ପ୍ରତିଫଳିତ କରିଥିଲା ।

ସକାଳ
THE SAKALA
Jeypore - 25 Jun 2024 - Page 12

# ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ

**କୋରାପୁଟ, ୨୪।୬(ସମିସ):** ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ପ୍ରୟାଗ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ କୋରାପୁଟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ କୋରାପୁଟସ୍ଥିତ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ମୁଖ୍ୟ କ୍ୟାମ୍ପସରେ ଉଦ୍‌ଘାଟିତ ହୋଇଯାଇଛି। ସମ୍ମିଳନୀରେ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ସ୍ୱାଗତ ଭାଷଣ ପ୍ରଦାନ ପୂର୍ବକ ହିନ୍ଦୀ ମାଧ୍ୟମରେ ବିଶ୍ୱକୁ ଯୋଡ଼ିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀକୁ କେବଳ ଏକ ଭାଷା ନୁହେଁ ଏହା ଭାରତର ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରତୀକ ଏବଂ ଭାରତର ଲୋକଙ୍କୁ ଏକଜୁଟ କରି ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିକୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରରେ ବିସ୍ତାର କରିବାର କ୍ଷମତା ରଖିଛି ବୋଲି କହିଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଭଲପାଇବା ପ୍ରକାଶ କରିବା ସହ ଅନ୍ତର୍ଜାତୀୟ ମଞ୍ଚରେ ଭାଷାର ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଭବିଷ୍ୟତର ପରିକଳ୍ପନା କରିଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସମୃଦ୍ଧ ଇତିହାସକୁ ସ୍ୱୀକୃତି ଦେବାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଏବଂ ଏହାର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅଗ୍ରଣୀମାନଙ୍କ ଅବଦାନ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଭାରତର ସାଂସ୍କୃତିକ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଭୂମିକା ଉପରେ ସେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିବା ସହ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଏହି ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା ପାଇଁ ନିରନ୍ତର ପ୍ରୟାସ ଜାରି ରଖିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀର ମୁଖ୍ୟଅତିଥି ଭାବେ ହାଇଦ୍ରାବାଦ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ପୂର୍ବତନ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ତଥା କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଆର୍ ଏସ୍ ସରରାଜୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭାରତ ସମେତ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ଅଞ୍ଚଳରେ ହିନ୍ଦୀକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଆବଶ୍ୟକତା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ଭାରତର ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଚେତନାକୁ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଭାବରେ ଚିତ୍ରଣ କରିଛି ଏବଂ ହିନ୍ଦୀର ବୈଷୟିକ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ। ଆଗ୍ରାସ୍ଥିତ ସେଣ୍ଟ୍ରାଲ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଅଫ୍ ହିନ୍ଦୀର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତଥା ଉଦଘାଟନୀ ସମାରୋହର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ସୁନୀଲ ବାବୁରାଓ କୁଲକର୍ଣ୍ଣି ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପରମ୍ପରାକୁ ଜାରି ରଖିବା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱାରୋପ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଦ୍ୱାରା ଡ. କୁଲକର୍ଣ୍ଣିଙ୍କୁ ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି ଉପାଧିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପୂର୍ବତନ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଅଧୀକ୍ଷକ ଶେଷ ମଣି ପାଣ୍ଡେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପରିଚାଳନା କରିଥିବା ବେଳେ ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ। ସମ୍ମିଳନୀରେ ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର ଡ. ନରସିଂହ ଚରଣ ପଣ୍ଡା, ହିଣ୍ଡିବିଭାଗରର ମୁଖ୍ୟ ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ସହକାରୀ ପ୍ରଫେସର ଡାକ୍ତର ମନୋଜ ସିଂହ, ଡ. ଶ୍ରୀକାନ୍ତ ଅର୍ଲେ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ନିର୍ଝରିଣୀ ତ୍ରିପାଠୀ, ଡ. ପଦ୍ମଚରଣ ମିଶ୍ର, ଡ. ପ୍ରସନ୍ନଜିତ ସିହ୍ନା, ଡ. କାକୋଲି ବାନାର୍ଜୀ, ଡ. ନବୀନ ପ୍ରଧାନ, ଡ. ଗୁରଜିତ୍ ୱାଲିଆ, ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡା, ଡ. ନିଖିଲ ଗୌଡ଼ା, ଡ. କପିଲ ଖେମେନ୍ଦୁ, ଡ. ସର୍ବେଶ୍ୱର ବାରିକ, ଡ. ଫଗୁନାଥ ଭୋଇ, କୁମାର ଗୌରବ, ଅସୀମଙ୍କ ସମେତ ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ୩୦୦ରୁ ଅଧିକ ପଣ୍ଡିତ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ହିନ୍ଦୀ ସେବାପ୍ରେମୀ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ। ପ୍ରଫେସର ରାମ କିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ।

**Biswabani**

# 75th National Convention of Hindi Sahitya Sammelan Concludes at CUO

## Hindi plays a crucial role in uniting the nation: Vice-Chancellor

*JOGENDRA SINGH.. JEYPORE*

The 75 National Convention of Hindi Sahitya Sammelan was concluded on 25 June 2024 with an open session. It was organized under the joint aegis of Hindi Sahitya Sammelan and Central University of Orissa, Koraput. The event began with a symposium on the theme "National Education Policy: Future Society," chaired by Prof. Bharat Kumar Panda. In his address, Prof. Panda highlighted the National Education Policy's focus on preserving India's traditional knowledge, promoting education in mother tongues, enhancing educational quality, and fostering inclusive education. Notable speakers included Dr. Sushil Kumar Upadhyay, Shri Mohan Krishna Bhardwaj, Dr. Manohar Mayur Jamuna Devi, and Dr. Deepti Bokan.In the open session, the Sahitya Vachak Shruti and Conference Samman awards were presented to recognize outstanding contributions to the Hindi language. Professor Hemraj Meena introduced the awardees and invited them to the stage. The distinguished honorees included Shri Manmohan Goyal, Shri Sushil Kumar Patra, Dr. Bhagwan Tripathi, Shri Charan Singh Meena, Dr. Chakradhar Pradhan, Dr. Manoj Kumar Singh, Professor Hemraj Meena, Dr. Manohar Mayur Jamuna Devi, Professor Ramkumar Mishra, Dr. Mali Patel Srinivasa Rao, Professor Vibhash Chandra Jha, Dr. Akhilesh Nigam Akhil, and Dr. Lokeshwar Prasad Sinha. Shri Shesh Mani Pandey then announced Dr. Ajay Kumar Patnaik and Professor Chakradhar Tripathi as recipients of the prestigious 'Sahitya Vachaspati' award, the highest honor of the Hindi Sahitya Sammelan. He provided detailed introductions and invited Shri Kuntak Mishra, Prime Minister of the Hindi Sahitya Sammelan, to present the awards to Dr. Patnaik and Prof. Tripathi. Dr. Patnaik reminisced about his student days and highlighted the national significance of the 'Sahitya Vachaspati Samman'. He shared his journey from Ganjam to Allahabad, driven by his passion for Hindi.Presiding over the open session, Professor Chakradhar Tripathi, Hon'ble Vice-Chancellor of the Central University of Odisha, delivered a stirring address, asserting that Hindi plays a crucial role in uniting the nation. He urged the people of Hindi-speaking regions to act as cultural coordinators and embrace other Indian languages and cultures. The event concluded with a vote of thanks from Professor Ramkishore Sharma, Literature Minister of Hindi Sahitya Sammelan. He expressed gratitude to the Vice-Chancellor, Registrar, Finance Officer, Security Officer, Public Relations Officer, and all Hindi enthusiasts from across India for their cooperation, warm hospitality, and respect. The ceremony ended with the national anthem, a heartfelt tribute to the nation.

ସକାଳ
THE SAKALA
Jeypore - 28 Jun 2024 - Page 12

### ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଉଦ୍‌ଯାପିତ

# 'ଦେଶକୁ ଏକତା ସୂତ୍ରରେ ବାନ୍ଧିବାରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାର ଭୂମିକା ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ'

କୋରାପୁଟ,୨୭।୬(ସମିସ): ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଏବଂ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଆୟୋଜିତ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଉଦଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି। ଉଦଯାପନୀ ସମାରୋହ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରଫେସର ଭରତ କୁମାର ପଣ୍ଡାଙ୍କ ଅଧକ୍ଷତାରେ ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି ଭବିଷ୍ୟତ ସମାଜ ଶୀର୍ଷକ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା। ଭାରତର ପାରମ୍ପରିକ ଜ୍ଞାନର ସଂରକ୍ଷଣ, ମାତୃଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାର ପ୍ରୋତ୍ସାହନ, ଶିକ୍ଷାର ଗୁଣବତ୍ତା ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ସାର୍ବଜନୀନ ଶିକ୍ଷାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଉପରେ ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତିର ଗୁରୁତ୍ୱ ଉପରେ ଶ୍ରୀ ପଣ୍ଡା ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଖୋଲା ଅଧିବେଶନରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ପ୍ରତି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶୃତି ଓ ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା। ମନମୋହନ ଗୋୟଲ, ସୁଶୀଲ କୁମାର ପାତ୍ର, ଡ. ଭଗବାନ ତ୍ରିପାଠୀ, ଚରଣ ସିଂହ ମୀନା, ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ଡ. ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ. ମନୋହର ମୟୂର, ଯମୁନା ଦେବୀ, ପ୍ରଫେସର ରାମକୁମାର ମିଶ୍ର, ଡ. ମାଲି ପଟେଲ, ଶ୍ରୀନିବାସ ରାଓ, ପ୍ରଫେସର ବିଭାଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଝା, ଡ. ଅଖିଳେଶ ନିଗମ ଅଖିଳ ଓ ଡ. ଲୋକେଶ୍ୱର ପ୍ରସାଦ ସିହ୍ନାଙ୍କୁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶୃତିରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ସମ୍ମିଳନୀର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନ ଡ. ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ। ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ଦେଶକୁ ଏକଜୁଟ କରିବାରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି ବୋଲି କହିଥିଲେ। ସେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳର ଲୋକଙ୍କୁ ସାଂସ୍କୃତିକ ସଂଯୋଜକ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ଭାରତୀୟ ଭାଷା ଏବଂ ସଂସ୍କୃତିକୁ ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ଅନୁରୋଧ କରିଛନ୍ତି। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସାହିତ୍ୟ ମନ୍ତ୍ରୀ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ।

**Dandakaranya Samachar**

# हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 75 वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

सुनाबेड़ा 27 जून (दंडकारण्य समाचार) हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग एवं ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 75 वें अधिवेशन का समापन समारोह दिनांक 25 जून 2024 को संपन्न हुआ। पूर्वाह्न 10. 30 बजे समाजशास्त्र परिषद् के परिसंवाद का विषय ष्राष्ट्रीय शिक्षा नीति भविष्य का समाजष् था । इसमें प्रो भरत कुमार पंडा ने सभापति के रूप में अपना व्याख्यान दिया ।उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान.संपदा संरक्षण मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इस परिसंवाद में विशिष्ट वक्ता डॉ सुशील कुमार उपाध्याय के साथ.साथ श्री मोहन कृष्ण भारद्वाज, डॉ मनोहर मयूर जमुना देवी एवं डॉ दीप्ति बोकन ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

अपराह्न 1. 00 बजे के बाद खुला अधिवेशन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जिसके अंतर्गत राष्ट्रभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु साहित्य वाचस्पति एवं ष्सम्मेलन सम्मानष् प्रदान किया गया। सबसे पहले प्रोफेसर हेमराज मीणा ने सम्मेलन सम्मान पाने वाले विद्वानों का परिचय देते हुए उन्हें मंच पर आमंत्रित किया। श्री मनमोहन गोयल श्री सुशील कुमार पात्र डॉ. भगवान त्रिपाठी श्री चरण सिंह मीणा डॉ. चक्रधर प्रधान डॉ. मनोज कुमार सिंह, प्रो. हेमराज मीणा, डॉ. मनोहर मयूर जमुना देवी, प्रो. रामकुमार मिश्र डॉ. माली पटेल श्रीनिवास राव प्रो, विभाष चंद्र झा डॉ. अखिलेश निगम अखिल, डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा आदि को ष्सम्मेलन सम्मान से सम्मानित किया गया।

इसके बाद शेषमणि पांडे ने हिंदी साहित्य सम्मेलन के सर्वोच्च सम्मान साहित्य वाचस्पति सम्मान के लिए डॉ अजय कुमार पटनायक एवं प्रोफेसर चक्रधर त्रिपाठी का नाम घोषित किया। उन्होंने इन दोनों विद्वानों का विस्तृत परिचय देते हुए उन्हें सम्मान प्रदान करने के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री कुंतक मिश्र को अनुरोध किया। डॉ अजय कुमार पटनायक ने इस अवसर पर हिंदी साहित्य सम्मेलन के साहित्य वाचस्पति सम्मान के राष्ट्रीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने छात्र जीवन को याद किया।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोण् चक्रधर त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी का काम देश को जोड़ कर रखना है ।हिंदी प्रदेश के लोग संयोजक का काम करें तथा भारतवर्ष की अन्य भाषा और संस्कृति को अपनाकर स्वयं को समृद्ध करें। आज नहीं तो कभी नहीं इसी मंत्र को सभी हिंदी प्रेमियों को आत्मसात् करना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में हिंदी साहित्य सम्मेलन के साहित्य मंत्री प्रो. रामकिशोर शर्मा ने भारतवर्ष के कोने.कोने से आए हिंदी प्रेमियों को तथा ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय से मिलने वाले आंतरिक सहयोग, प्रेम पूर्ण व्यवहार और आतिथ्य का उल्लेख करते हुए कुलपति, कुलसचिव, वित्त अधिकारी, सुरक्षा अधिकारी, जनसंपर्क अधिकारी समेत सभी को विशेष धन्यवाद दिया । समारोह के अंत में अपने तन .मन राष्ट्र को समर्पित करते हुए सभी ने राष्ट्रगान किया।

୧୦୪ ବର୍ଷର ପ୍ରକାଶନ
ଦୈନିକ ସଂସ୍କରଣ : ଆର୍.ଏନ୍.ଆଇ ନଂ. ୪୦୦୫/୫୭
ପି.ଆର୍. ନଂ. ସିକେ(ସି)/୧୭/୨୦୨୪-୨୦୨୬
104 YEARS OF PUBLICATION
Daily Edition: R.N.I. No. 4005/57
P.R. No. CK(C)/17/2024-2026
କଟକ, ମଙ୍ଗଳବାର ୨୫ ଜୁନ୍ ୨୦୨୪
Cuttack, Tuesday 25 June 2024
ଆଜି ମିଥୁନ ୧୧ ଦିନ, ୧୪୩୧ ସାଲ
ଆଷାଢ଼ ୪ ଦିନ, ୧୯୪୬ ଶକାବ୍ଦ, କୃଷ୍ଣପକ୍ଷ ଚତୁର୍ଥୀ
ଭାଗ- ୯୫ ସଂଖ୍ୟା- ୧୭୩
www.thesamaja.com
www.samajaepaper.com
www.samajalive.in
ଟ ୭.୦୦ (୧୬ ପୃଷ୍ଠା)
★★★

ସମାଜ
The Samaja
ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା-ଉତ୍କଳମଣି ଗୋପବନ୍ଧୁ ଦାସ
PRINTED AT CUTTACK, SAMBALPUR, BALESWAR, JEYPORE

# ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଯାପିତ

ସୁନାବେଡ଼ା, ୨୬ ।୬(ନିପ୍ର): ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଓ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଆୟୋଜିତ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଉଦ୍‌ଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି । ଉଦ୍‌ଯାପନୀ ସମାରୋହ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରଫେସର ଭରତ କୁମାର ପଣ୍ଡାଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ 'ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି: ଭବିଷ୍ୟତ ସମାଜ' ଶୀର୍ଷକ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା । ପ୍ରଫେସର ପଣ୍ଡା ତାଙ୍କ ଅଭିଭାଷଣରେ ଭାରତର ପାରମ୍ପରିକ ଜ୍ଞାନର ସଂରକ୍ଷଣ, ମାତୃଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାର ପ୍ରୋତ୍ସାହନ, ଶିକ୍ଷାର ଗୁଣବତ୍ତା ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ସାର୍ବଜନୀନ ଶିକ୍ଷାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଉପରେ ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତିର ଗୁରୁତ୍ୱ ନେଇ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ । ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଡ.ସୁଶୀଲ କୁମାର ଉପାଧ୍ୟାୟ, ମୋହନକୃଷ୍ଣ ଭରଦ୍ୱାଜ, ଡ. ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ ଏବଂ ଡ.ଦୀପ୍ତି ବୋକାନ ପ୍ରମୁଖ ବକ୍ତବ୍ୟ ରଖିଥିଲେ । ଖୋଲା ଅଧିବେଶନରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାପ୍ରତି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶ୍ରୁତି ଓ ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା । ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ପୁରସ୍କାର ବିଜେତାଙ୍କୁ ପରିଚୟ ଦେଇ ମଞ୍ଚକୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ କରିଥିଲେ । ମନମୋହନ ଗୋୟଲ, ସୁଶୀଲ କୁମାର ପାତ୍ର, ଡ. ଭଗବାନ ତ୍ରିପାଠୀ, ଚରଣସିଂହ ମୀନା, ଡ.ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ଡ.ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ.ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ, ପ୍ରଫେସର ରାମକୁମାର ମିଶ୍ର, ଡ.ମାଲି ପଟେଲ, ଶ୍ରୀନିବାସ ରାଓ, ପ୍ରଫେସର ବିଭାଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଝା, ଡ.ଅଖିଳେଶ ନିଗମ ଅଖିଳ ଓ ଡ.ଲୋକେଶ୍ୱର ପ୍ରସାଦ ସିହ୍ନା ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶ୍ରୁତିରେ ସମ୍ମାନିତ ହୋଇଥିଲେ । ଶେଷମଣି ପାଣ୍ଡେଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ 'ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି' ସମ୍ମାନରେ ସମ୍ମାନିତ କାରିବାକୁ ଡ.ଅଜୟ କୁମାର ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ନାମ ଘୋଷଣା କରାଯାଇଥିଲା । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ଏହି ସମ୍ମାନ ଡ. ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ । ସାହିତ୍ୟ ମନ୍ତ୍ରୀ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରିଥିଲେ । ସମାରୋହ ଶେଷରେ ସମସ୍ତେ ଜାତୀୟ ସଙ୍ଗୀତଗାନ କରାଯାଇଥିଲା ।

## ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଉଦଯାପିତ

# ଦେଶକୁ ଏକତା ସୂତ୍ରରେ ବାନ୍ଧିବାରେ ହିନ୍ଦୀଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି: କୁଳପତି

ବୋରିଗୁମ୍ମା,୨୬।୬ (ଆନିସ): ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଓ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ଆୟୋଜିତ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ୨୦୨୪ ଜୁନ୍ ୨୫ ତାରିଖରେ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପରିସରରେ ଏକ ଖୋଲା ଅଧିବେଶନ ସହିତ ଉଦଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି । ଉଦଯାପନି ସମାରୋହ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରଫେସର ଭରତ କୁମାର ପଣ୍ଡାଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି: ଭବିଷ୍ୟତ ସମାଜ ଶୀର୍ଷକ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା। ପ୍ରଫେସର ପଣ୍ଡା ତାଙ୍କ ଅଭିଭାଷଣରେ ଭାରତର ପାରମ୍ପରିକ ଜ୍ଞାନର ସଂରକ୍ଷଣ, ମାତୃଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାର ପ୍ରୋତ୍ସାହନ, ଶିକ୍ଷାର ଗୁଣବତ୍ତା ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ସାର୍ବଜନୀନ ଶିକ୍ଷାକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବା ଉପରେ ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷା ନୀତିର ଗୁରୁତ୍ୱ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଡ. ସୁଶୀଲ କୁମାର ଉପାଧ୍ୟାୟ, ମୋହନ କୃଷ୍ଣ ଭରଦ୍ୱାଜ, ଡ. ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ ଏବଂ ଡ. ଦୀପ୍ତି ବୋକାନ ପ୍ରମୁଖ ବକ୍ତବ୍ୟ ରଖିଥିଲେ।

ଖୋଲା ଅଧିବେଶନରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାପ୍ରତି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶ୍ରୁତି ଓ ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା। ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା ପୁରସ୍କାର ବିଜେତାଙ୍କୁ ପରିଚୟ ଦେଇ ମଞ୍ଚକୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ କରିଥିଲେ। ଶ୍ରୀ ମନମୋହନ ଗୋୟଲ, ଶ୍ରୀ ସୁଶୀଲ କୁମାର ପାତ୍ର, ଡ ଭଗବାନ ତ୍ରିପାଠୀ, ଶ୍ରୀ ଚରଣ ସିଂହ ମୀନା, ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ଡ ମନୋଜ କୁମାର ସିଂହ, ପ୍ରଫେସର ହେମରାଜ ମୀନା, ଡ ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ, ପ୍ରଫେସର ରାମକୁମାର ମିଶ୍ର, ଡ. ମାଲି ପଟେଲ ଶ୍ରୀନିବାସ ରାଓ, ପ୍ରଫେସର ବିଭାଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଝା, ଡ. ଅଖିଳେଶ ନିଗମ ଅଖିଳ ଓ ଡ. ଲୋକେଶ୍ୱର ପ୍ରସାଦ ସିହ୍ନା ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶ୍ରୁତିରେ ସମ୍ମାନିତ ହୋଇଥିଲେ।

ଏହାପରେ ଶେଷ ମଣି ପାଣ୍ଡେ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନରେ ସମ୍ମାନିତ କାରିବାକୁ ଡ. ଅଜୟ କୁମାର ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ନାମ ଘୋଷଣା କରିଥଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ କୁନ୍ତକ ମିଶ୍ର ସମ୍ମିଳନୀର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନ ଡ. ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ। ଡ. ପଟ୍ଟନାୟକ ତାଙ୍କ ଛାତ୍ର ଦିବସକୁ ସ୍ମରଣ କରିବା ସହ ସାହିତ୍ୟ ବଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନର ଜାତୀୟ ମହତ୍ତ୍ୱ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଆଗ୍ରହ ରେ ସେ ଗଞ୍ଜାମରୁ ଆହ୍ଲାବାଦ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯାତ୍ରା କରିଥିଲେ । ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ମାନ୍ୟବର କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ ଉଦ୍ ବୋଧନ ଦେଇ କହିଲେ, ଦେଶକୁ ଏକଜୁଟ କରିବାରେ ହିନ୍ଦୀର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି। ସେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳର ଲୋକଙ୍କୁ ସାଂସ୍କୃତିକ ସଂଯୋଜକ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ଭାରତୀୟ ଭାଷା ଏବଂ ସଂସ୍କୃତିକୁ ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲେ । ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସାହିତ୍ୟ ମନ୍ତ୍ରୀ ପ୍ରଫେସର ରାମକିଶୋର ଶର୍ମା ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ କରି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଶେଷ କରିଥିଲେ। ସେ କୁଳପତି, ରେଜିଷ୍ଟ୍ରାର, ଫାଇନାନ୍ସ ଅଧିକାରୀ, ସୁରକ୍ଷ୍ୟା ଅଧିକାରୀ, ଲୋକ ସମ୍ପର୍କ ଅଧିକାରୀ ଏବଂ ସମଗ୍ର ଭାରତର ସମସ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରେମୀଙ୍କୁ ସହଯୋଗ, ଆତିଥ୍ୟ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପାଇଁ କୃତଜ୍ଞତା ଜ୍ଞାପନ କରିଥିଲେ । ସମାରୋହ ଶେଷରେ ସମସ୍ତେ ଜାତୀୟ ସଙ୍ଗୀତ ଗାନ କରିବା ସହ ନିଜ ଶରୀର ଓ ମନକୁ ଦେଶ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଉତ୍ସର୍ଗ କରିଥିଲେ।

ଧରିତ୍ରୀ
DHARITRI
ଭୁବନେଶ୍ୱର, ଗୁରୁବାର, ଜୁନ୍ ୨୭ /୨୦୨୪ (୧୬ ପୃଷ୍ଠା) | Bhubaneswar, Thursday, June 27/2024 | Page 16 | ₹ 7.00 | RAYAGADA
୫୦ଶ ଭାଗ ୨୧୩ ସଂଖ୍ୟା | www.orissakhabar.com/www.dharitri.com | Printed at Rayagada, Bhubaneswar, Sambalpur & Angul | VOLUME 50 ISSUE 213 | ମୂଲ୍ୟ ₹୭/-

# ଦେଶକୁ ଏକତା ସୂତ୍ରରେ ବାନ୍ଧିବାରେ ହିନ୍ଦୀଭାଷା ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ: କୁଳପତି

## ସିୟୁଓର ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଯାପିତ

**କୋରାପୁଟ,୨୬।୬(ଅମିତାଭ ବେହେରା)**

ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ ଓ ଓଡ଼ିଶା କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ(ସିୟୁଓ)ର ମିଳିତ ଆନୁକୂଲ୍ୟରେ ୩ ଦିନ ଧରି ଚାଲିଥିବା ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ୭୫ତମ ଜାତୀୟ ଅଧିବେଶନ ଉଦ୍‌ଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି। ଦେଶକୁ ଏକତା ସୂତ୍ରରେ ବାନ୍ଧି ରଖିବାରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି ବୋଲି ସିୟୁଓ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀ କହିଥିଲେ। ଉଦ୍‌ଯାପନୀ ସମାରୋହ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରଫେସର ଭରତ ପଣ୍ଡାଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ 'ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି: ଭବିଷ୍ୟତ ସମାଜ' ଶୀର୍ଷକ ଏକ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର ହୋଇଥିଲା। ପ୍ରଫେସର ପଣ୍ଡା, ଡ. ସୁଶୀଲ ଉପାଧ୍ୟାୟ, ମୋହନ କୃଷ୍ଣ ଭରଦ୍ୱାଜ, ଡ. ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ ଏବଂ ଡ. ଦୀପ୍ତି ବୋକାନ ନିଜ ନିଜ ବକ୍ତବ୍ୟ ରଖିଥିଲେ। ଉଦ୍‌ଯାପନୀ ଅଧିବେଶନରେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ପ୍ରତି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ବାଚକ ଶ୍ରୁତି ଓ ସମ୍ମିଳନୀ ସମ୍ମାନ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା। ହେମରାଜ ମୀନା ପୁରସ୍କୃତ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ମଞ୍ଚକୁ ଆମନ୍ତ୍ରଣ କରିଥିଲେ। ମନମୋହନ ଗୋୟଲ, ସୁଶୀଲ ପାତ୍ର, ଡ ଭଗବାନ ତ୍ରିପାଠୀ, ଚରଣ ସିଂହ ମୀନା, ଡ. ଚକ୍ରଧର ପ୍ରଧାନ, ଡ ମନୋଜ ସିଂହ, ପ୍ରଫେସର ମୀନା, ଡ ମନୋହର ମୟୂର ଯମୁନା ଦେବୀ, ପ୍ରଫେସର ରାମକୁମାର ମିଶ୍ର, ଡ. ମାଲି ପଟେଲ ଶ୍ରୀନିବାସ ରାଓ, ପ୍ରଫେସର ବିଭାସ ଚନ୍ଦ୍ର ଝା, ଡ. ଅଖିଳେଶ ନିଗମ ଅଖିଳ ଓ ଡ. ଲୋକେଶ୍ୱର ପ୍ରସାଦ ସିହ୍ନାଏହି ସମ୍ମାନରେ ସମ୍ମାନିତ ହୋଇଥିଲେ। ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ 'ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି' ସମ୍ମାନରେ ଡ. ଅଜୟ ପଟ୍ଟନାୟକ ଓ ପ୍ରଫେସର ଚକ୍ରଧର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା। ଡ. ପଟ୍ଟନାୟକ ସାହିତ୍ୟ ବାଚସ୍ପତି ସମ୍ମାନର ଜାତୀୟ ମହତ୍ତ୍ୱ ଉପରେ ଆଲୋକପାତ କରିଥିଲେ। କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ତ୍ରିପାଠୀ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷୀ ଅଞ୍ଚଳର ଲୋକଙ୍କୁ ସାଂସ୍କୃତିକ ସଂଯୋଜକ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଥିଲେ।

ଅତିଥିମାନେ ଜଣେ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ କରୁଛନ୍ତି ।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Odisha Patrika - 27 Jun 2024 - 27bsrp1
epaper.navabharat.news

# देश को जोड़ कर रखना है हिंदी का काम : प्रो. चक्रधर

## हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय कोरापुट का आयोजन

**नवभारत रिपोर्टर। कोरापुट।** हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग एवं ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 75वें अधिवेशन का समापन हो गया। कल पूर्वाह्न 10.30 बजे समाजशास्त्र परिषद के परिसंवाद का विषय राष्ट्रीय शिक्षा नीति भविष्य का समाज था। इसमें प्रो. भरत कुमार पंडा ने सभापति के रूप में अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान-संपदा संरक्षण, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इस परिसंवाद में विशिष्ट वक्ता डॉ. सुशील कुमार उपाध्याय के साथ-साथ मोहन कृष्ण भारद्वाज, डॉ. मनोहर मयूर जमुना देवी एवं डॉ. दीप्ति बोकन ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

अपराह्न 1.00 बजे के बाद खुला अधिवेशन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसके अंतर्गत राष्ट्रभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु साहित्य वाचस्पति एवं सम्मेलन सम्मान प्रदान किया गया। सबसे पहले प्रोफेसर हेमराज मीणा ने सम्मेलन सम्मान पाने वाले विद्वानों का परिचय देते हुए उन्हें मंच पर आमंत्रित किया। मनमोहन गोयल, सुशील कुमार पात्र, डॉ. भगवान त्रिपाठी, चरण सिंह मीणा, डॉ. चक्रधर प्रधान, डॉ. मनोज कुमार सिंह, प्रो. हेमराज मीणा, डॉ. मनोहर मयूर जमुना देवी, प्रो. रामकुमार मिश्र, डॉ. माली पटेल श्रीनिवास राव, प्रो. विभाष चंद्र झा, डॉ. अखिलेश निगम अखिल, डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा आदि को सम्मेलन सम्मान से सम्मानित किया गया।

इसके बाद शेषमणि पांडेय ने हिंदी साहित्य सम्मेलन के सर्वोच्च सम्मान साहित्य वाचस्पति सम्मान के लिए डॉ. अजय कुमार पटनायक एवं प्रोफेसर चक्रधर त्रिपाठी का नाम घोषित किया। उन्होंने इन दोनों विद्वानों का विस्तृत परिचय देते हुए उन्हें सम्मान प्रदान करने के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री कुंतक मिश्र को अनुरोध किया। डॉ. अजय कुमार पटनायक ने इस अवसर पर हिंदी साहित्य सम्मेलन के साहित्य वाचस्पति सम्मान के राष्ट्रीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने छात्र जीवन को याद किया। उन्होंने कहा कि गंजाम से इलाहाबाद तक पहुंचना उनके समय में आसान नहीं था, किंतु हिंदी पढ़ने के लिए उनमें एक जुनून पैदा हुआ था जिसके कारण सारी कठिनाइयों को पार करते हुए उन्होंने उच्च शिक्षा में हिंदी का अध्ययन किया और हिंदी सेवा में अपने आप को नियोजित किया।

https://www.htsyndication.com/india-education-diary/article/inauguration-of-the-75th-amrit-mahotsav-convention-of-the-hindi-sahitya-sammelan-at-central-university-of-odisha%2C-koraput/82450978

https://indiaeducationdiary.in/75th-hindi-sahitya-sammelan-concludes-with-grand-open-session-at-central-university-of-odisha/

https://pragativadi.com/cuo-successfully-concludes-75th-national-convention-of-hindi-sahitya-sammelan/#:~:text=Koraput%3A%20The%2075%20National%20Convention,Central%20University%20of%20Orissa%2C%20Koraput.

https://epaper.navabharat.news/clip/679174

https://alokpurush.in/%e0%a4%b9%e0%a4%bf%e0%a4%82%e0%a4%a6%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%b9%e0%a4%bf%e0%a4%a4%e0%a5%8d%e0%a4%af-%e0%a4%b8%e0%a4%ae%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%b2%e0%a4%a8-%e0%a4%8f%e0%a4%b5-2/

https://hindimedia.in/75-va-rashtriya-adhivesh/

https://sambad.in/state/national-convention-of-hindi-sahitya-sammelan-concludes-at-cuo-1166306/

https://www.instagram.com/p/C8rXEqVsq--/?igsh=ODIxMGs2OGNpZXp2

https://www.facebook.com/share/p/yLXZeZ3YQiP7wqDu/?mibextid=xfxF2i

https://x.com/cuokoraput/status/1805926831067181087?t=86kGK8vXVqHvChVfy9cwQA&s=08

https://orissadiary.com/75th-hindi-sahitya-sammelan-concludes-with-grand-open-session-at-central-university-of-odisha/#google_vignette

https://sambad.in/state/inauguration-of-the-75th-amrit-mahotsav-convention-of-the-hindi-sahitya-sammelan-1166087/

https://odishabarta.com/inauguration-of-the-75th-amrit-mahotsav-convention-of-the-hindi-sahitya-sammelan-at-cuo-koraput/

https://indoasiantimes.com/odisha/news-28218/

https://alokpurush.in/%e0%a4%b9%e0%a4%bf%e0%a4%82%e0%a4%a6%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%b9%e0%a4%bf%e0%a4%a4%e0%a5%8d%e0%a4%af-%e0%a4%b8%e0%a4%ae%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%b2%e0%a4%a8-%e0%a4%8f%e0%a4%b5/

https://orissadiary.com/inauguration-of-the-75th-amrit-mahotsav-convention-of-the-hindi-sahitya-sammelan-at-central-university-of-odisha-koraput/

https://indiaeducationdiary.in/inauguration-of-the-75th-amrit-mahotsav-convention-of-the-hindi-sahitya-sammelan-at-central-university-of-odisha-koraput/